शिव तांडव स्तोत्र

- रावण द्वारा लिखित

जटाटवी गल ज्जल प्रवाह पावित स्थले गलेऽ वलम्ब्य लम्बितां भुजंग तुंग मालिकाम्। डमड्डम ड्डम ड्डम निनादवड्डमर्वयं चकार चंड तांडवं तनोतु नः शिवः शिवम **1**	जटा कटाह संभ्रम भ्रम न्निलिंप निर्झरी विलोल वीचि वल्लरी विराज मान मूर्धनि । धगद्धगद्धग ज्ज्वलल्ल लाट पट्ट पावके किशोर चंद्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं ममं **2**
धरा धरेंद्र नंदिनी विलास बंधु वंधुर- स्फुरद्दगंत संतति प्रमोद मान मानसे । कृपा कटाक्ष धारणी निरुद्ध दुर्ध रापदि कवचिद्विगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ **3**	जटा भुजं गपिंगल स्फुरत्फणा मणि प्रभा- कदंब कुंकुम द्रव प्रलिप्त दिग्व धूमुखे । मदांध सिंधुर स्फुरत्वगुत्तरी यमेदुरे मनो विनोद द्भुतं बिंभर्तु भूत भर्तरि ॥ **4**
सहस्र लोचन प्रभृत्य शेष लेख शेखर- प्रसून धूलि धोरणी विधू सरांघ्रि पीठभूः । भुजंग राज मालया निबद्ध जाट जूटकः श्रिये चिराय जायतां चकोर बंधु शेखरः ॥ **5**	ललाट चत्वरज्वलद्धनंजयस्फुरिगभा- निपीतपंचसायकं निमन्निलिंपनायम् । सुधा मयुख लेखया विराजमानशेखरं महा कपालि संपदे शिरोजयालमस्तू नः ॥ **6**
कराल भाल पट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल- द्धनंजया धरीकृतप्रचंडपंचसायके । धराधरेंद्र नंदिनी कुचाग्रचित्रपत्रक- प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥ **7**	नवीन मेघ मंडली निरुद्धदुर्धरस्फुर- त्कुहु निशीथिनीतमः प्रबंधबंधुकंधरः । निलिम्पनिर्झरि धरस्तनोतु कृत्ति सिंधुरः कलानिधानबंधुरः श्रियं जगंद्धुरंधरः ॥ **8**
प्रफुल्ल नील पंकज प्रपंचकालिमच्छटा- विडंबि कंठकंध रारुचि प्रबंधकंधरम् स्मरच्छिदं पुरच्छिंद भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥ **9**	अगर्वसर्वमंगला कलाकदम्बमंजरी- रसप्रवाह माधुरी विजृंभणा मधुव्रतम् । स्मरांतकं पुरातकं भावंतकं मखांतकं गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे ॥ **10**
जयत्वदभ्रविभ्रम भ्रमद्भुजंगमस्फुर- द्धगद्धगद्वि निर्गमत्कराल भाल हव्यवाट्- धिमिद्धिमिद्धिमि नन्मृदंगतुंगमंगल- ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥ **11**	दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंग मौक्तिकमस्रजो- र्गरिष्ठरत्नलोष्टयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः । तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ **12**
कदा निलिंपनिर्झरी निकुजकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन्। विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मंत्रमुच्चरन्कदा सुखी भवाम्यहम्॥ **13**	निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका- निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः । तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहनिशं परिश्रय परं पदं तदंगजत्विषां चयः ॥ **14**
प्रचण्ड वाडवानल प्रभा शुभ प्रचारणी महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना । विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः शिवेति मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥ **15**	इमं हि नित्यमेव मुक्तमुक्तमोत्तम स्तवं पठन्स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम्। हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नांयथा गतिं विमोहनं हि देहना तु शंकरस्य चिंतनम ॥ **16**

पूजाऽवसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भूपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेंद्रतुरंगयुक्तां
लक्ष्मी सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥
॥ इति शिव तांडव स्तोत्रं संपूर्णम्॥

Source: https://www.hindugallery.com/